By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhuban

1772 से 1803 ई० तक आंग्ल-मराठा संबंधों का चित्रण

(Anglo- Maratha Relations from 1772-1803)

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत में मराठा शक्ति का प्रभुत्व स्थापित हो गया। 18वी शताब्दि के उत्तरार्द्ध में भारत में मराठों के अतिरिक्त अन्य कोई शक्ति नहीं थी। अँग्रेज इस तथ्य से भलीभाँति परिचित थे कि भारत में उस समय केवल मराठों द्वारा ही अँग्रेजों को चुनौती दी जा सकती थी। अतः अँग्रेजों का मराठों से संघर्ष होना स्वाभाविक था। 1772 ई० में पेशवा माधवराव प्रथम की मृत्यु हो गयी तथा मराठा संघ में फूट पड़ गई। इससे अँग्रेजों को मराठों संघ के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया। इसके परिणामस्वरूप 1779 ई० में मराठों तथा अँग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ गया।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध के कारण :-

1. मराठों के प्रति अँग्रेजों की नीति:- सन 1772 ई० के पूर्व मराठों और अँग्रेजों के बीच सीधा सम्पर्क नहीं हुआ था। वारेन हेस्टिंग्स के गवर्नर बनने के बाद अँग्रेजों की मराठा नीति आरम्भ हो गयी। वारेन हेस्टिंग्स चाहता था कि मराठों की बढ़ती हुई शक्ति का कम्पनी के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़े तथा मराठे मुम्बई पर आक्रमण नहीं कर सकें। इसके अतिरिक्त वह मराठों के आक्रमण से बंगाल की रक्षा करना चाहता था। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह आवश्यकता था कि अवध प्रांत को कंपनी के पक्ष में करके उसकी शक्ति को बढ़ाया जाय ताकि मराठे बंगाल पर आक्रमण न कर सके। दूसरी ओर सालसेट पर अधिकार प्राप्त किया जा सके ताकि मराठे बम्बई पर आक्रमण न कर सके। वारेन हेस्टिंग्स की मराठा नीति के यही प्रमुख आधार थे।

2. मराठा सरदारों की आपसी फूट :- सन 1772 ई० मे पेशवा माधव राव की मृत्यु हो गयी। इसकी मृत्यु के बाद पेशवा पद के लिए संघर्ष छिड़ गया। माधवराव के बाद उसका छोटा भाई नारायण राव पेशवा हुआ। परन्तु उसके चाचा रघुनाथराव जो स्वंय पेशवा बनना चाहता था, ने षडयंत्र रचकर 30 अगस्त 1773 मे उसका वध करवा दिया और स्वंय पेशवा बन गया। नाना फड़नवीस तथा माधवराव के अन्य समर्थक माधवराव के अल्पवयस्क पुत्र को पेशवा बनाने का प्रयत्न करने लगे और उन्होंने माधवराव के पुत्र को पेशवा घोषित कर दिया।

3 राघोबा व अंग्रेजों के बीच सूरत की संधि :- राघोबा ने नाना फड़नवीस के विरुद्ध बम्बई की अंग्रेजी सरकार से मदद माँगी और बम्बई के गवर्नर से मार्च 1775 ई० मे सूरत की संधि कर ली जिसके अनुसार सालसेट और बसीन अंग्रेजों को देने का वचन दिया गया। यहीं से मराठों का अंग्रेजों से सीधा सम्पर्क हुआ। बम्बई की सरकार ने यह संधि बंगाल की सरकार को आज्ञा प्राप्त किये बिना ही कर ली थी क्योंकि अंग्रेज तो मराठों की पारस्परिक फूट का लाभ उठाने को तैयार बैठे थे। उस संधि के अनुसार अंग्रेज ने रघुनाथराव को सैनिक सहायता देने का वचन दिया तथा बदले मे रघुनाथराव ने अंग्रेजी सेना का व्यय उठाने, सालसेट और बसीन के प्रदेश तथा सूरत और भड़ौंच के राजस्व का कुछ भाग देना स्वीकार किया। रघुनाथराव ने यह भी स्वीकार किया कि वह अंग्रेजों के शत्रुओं से कोई संधि नही करेगा।